ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड – VIII अंक –V

अगस्त, 2016

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- "अराइस-2016-लॉंच पैड फॉर एग्री-स्टार्टअप्स" में नागालैंड के कृषि उद्यमी उत्तीर्ण।
- इस माह के कृषिउद्यमी: श्री. रमेश खलादकर और श्री. ध्यानेश्वर पिंगले
- इस माह का संस्थान: एक्शन फॉर वेलफ़ैर एंड अवेकनिंग इन रुरल एंवीरोंमेंट (अवेर)- हैदराबाद, तेलंगाना
- अहमदाबाद, गुजरात में "ग्लोबल एग्रिकल्चर सम्मिट-2013" में सम्मानित कृषि उद्यमी श्री. शैलेंद्र अवस्थी

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

"अराइस-2016-लॉंच पैड फॉर एग्री-स्टार्टअप्स" में नागालैंड के कृषि उद्यमी उत्तीर्ण

इस वर्ष के 2014 में पहले एग्रीबीज़ इंक्यूबेशन प्रोग्राम की सफलता से प्रोत्साहित हो कर क्षेत्रीय प्रौद्योगिकी प्रबंधन एवं व्यवसाय नियोजन और विकास इकाई, आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने उत्तर भारत के आईसीएआर संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सहयोग से 9 जून, 2016 को क्षेत्रीय कार्यशाला एवं अराइस प्रक्षेपण दिवस आयोजित किया। अराइस भारत सरकार की "स्टार्ट-उप इंडिया" और "कौशल भारत" जैसी नीतियों के मेल में एक पहल है जिसका लक्ष्य है आज के बाज़ार की जरूरतों के लिए नए उपाय प्रदान करने के लिए उभरते कृषिउद्यमियों को एक मंच प्रदान करना। अराइस युवा कृषिउयमियों को / उनके विकास के विभिन्न स्तरों पर उनके विचार (विचार/प्रोटोटाइप विकास/विस्तार चरण) को पहचानता है और एक व्यवहार्य व्यवसाय का प्रस्ताव बनाने के लिए आवश्यक परामर्श सहयोग और उद्योगों का विवरण प्रदान करता है। उभरते उद्यमियों से 30 जून से 4 अगस्त, 2016 तक ऑनलाइन और ऑफलाइन आवेदन पत्र प्राप्त किए गए थे। मार्गदर्शन दो चरणों में अर्थात अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन (15 दिन) तथा व्यवसाय कार्यशाला (6 दिन) द्वारा प्रदान किया गया था।

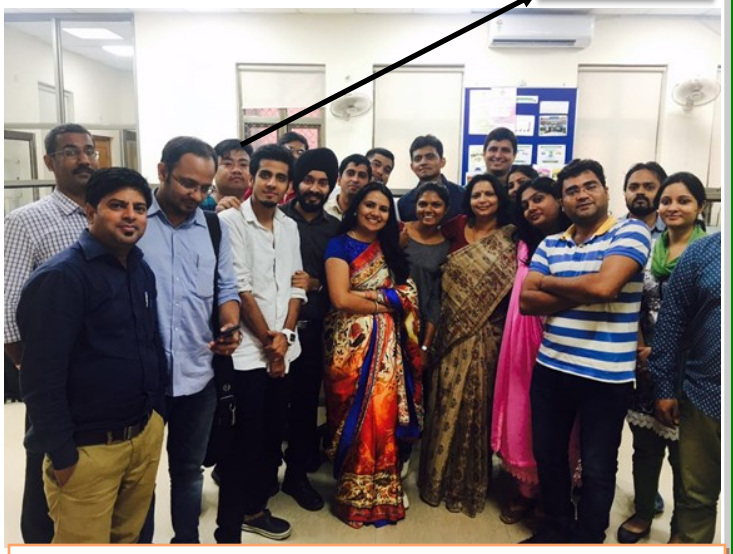

श्री कटहो यस.अचुमि अग्रि बिज़ इन्क्यूबेशन कार्यक्रम नई दिल्ली, में उत्तीर्ण हुए

नॉर्थ ईस्ट नागा ट्रेडर्स प्राइवेट, लिमिटेड, दिमापुर, नागालैंड से एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित 28 वर्षीय कृषिउद्यमी श्री. कटोहो एस. अचूमी ने ऑनलाइन आवेदन किया और अराइस लॉंच पैड के लिए चयनित किए गए। श्री. कोटोहो ने नागालैंड में पाइन रेसिन उद्योग के आधार पर अपनी रु.6.5 करोड़ डील की परियोजना "पाइन रेसिन एक्स्ट्राक्शन" के कारण पूरे देश से चयनित 30 उद्यमियों में जगह बनाई। कटोहो अराइस लॉंच पैड के सबसे युवा सफल व्यक्ति है। कटोहो का कहना है कि सरकार के पास कई ऐसी सुविधाएं उपलब्ध है जिसका शायद ही उपयोग होता है। यदि सरकार इन सुविधाओं का उत्साही उद्यमियों को प्रयोग करने दे तो यह उद्यमियों के लिए लाभप्रद होगा।

श्री. कटोहो की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुये, श्री. चिशी कठी, एनईएनटीपीएल, दिमापुर के नोडल अधिकारी ने कृषिउद्यमियों के समक्ष बैंक से ऋण प्राप्त करने के लिए आ रही समस्या को चिन्हित किया। उन्होंने सरकार द्वारा उभरते उद्यमियों को संरक्षण प्रदान करने का कदम जो ग्रामीण आधारित कृषि-उद्यमिता में क्रांति ला सकता है को सराहा। अधिक जानकारी के लिए कृपया श्री.कटोहो एस. अचूमी को +91 8743888320 पर संपर्क करें।

दीर्घकालिक स्थिरता, जैविक तरीके से

नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर और अन्य माध्यमिक तत्व जो भूमि की इकाई क्षेत्र उत्पादकता बढ़ाने में योगदान देता है को अच्छी तरह से पहचाना गया है। संकर, अधिक उपज देने वाली किस्में, अनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें जो उच्च रासायनिक उर्वरकों को प्रतिक्रिया देती है जैसी आधुनिक गहन खेती पद्धतियाँ मट्टी में से अधिक मात्र में यह आवश्यक सूक्ष्मतत्व खत्म कर देती है। इसके विपरीत, जैव-एजेंट इन सभी मुद्दों पर काबू पाने में सक्षम हैं। हालांकि, जैव-एजेंटों के उपयोग के ऐसे फायदे के बारे में जागरूकता की कमी के कारण, प्राकृतिक यौगिकों की संभावना अभी भी अप्रयुक्त है। नीम में मौजूद अजाड़ीरेकटिन, लिमोनोइड्स और निमबिन जैसे सक्रिय घटक जो व्यापक स्पेक्ट्रम गतिविधि दर्शातें है तथा सैकड़ों कीट प्रजातियों पर प्रभाव डालते है और मिट्टी का रखरखाव भी करते है के कारण इसे सबसे प्रभावकारी दौहरे उद्देश्य वाला जैव-एजेंट माना गया है। नीम के अजाड़ीरेकटिन, लिमोनोइड्स और निमबिन के संभावित लाभों को पहचान कर, 2015 में नीम आधारित प्राकृतिक उत्पाद विशेष रूप से जैव-खाद, तेल और जैव-कीटनाशक उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से रमेश और ध्यानेश्वर ने "मौली ऐग्रोटेक" स्थापित किया।

ऑइल एक्स्पेल्लर के साथ श्री. रमेश खलादकर

डी-स्टोन मशीन के साथ श्री. ज्ञानेश्वर पिंगले

इस कंपनी के संस्थापक है श्री. रमेश खलादकर (25) और श्री. ध्यानेश्वर पिंगले (26) कृषि स्नातक जो एक ही गाँव खलादकर वस्ती, पिंपरी दूमल, तालुका शिरुर, पुणे, महाराष्ट्र के निवासी हैं। स्नातक के बाद श्री. रमेश ने राज्य वन विभाग और निजी क्षेत्रों के लिए इको-पर्यटन परियोजनाओं में सफलतापूर्वक परामर्श, परियोजना निर्माण, डिज़ाइनिंग और कार्यान्वयन आरंभ किया। श्री. ज्ञानेश्वर ने प्रतियोगिता परीक्षाएँ दी। एक बार, उनके आम दोस्त ने उन्हें एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र योजना के बारे में बताया, सभी लाभों को ध्यान में रखते हुये, दोनों ने शाश्वत शेटी विकास प्रतिष्ठान (एसएसवीपी) पुणे में प्रशिक्षण में प्रवेश लिया। प्रशिक्षण के दौरान, मुख्यतः व्यावहारिक अनुभव के दौरान, दोनों दोस्तों ने नीम के बीज के पिंड की विनिर्माण इकाई की तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का निर्णय लिया। उन्होंने गुजरात में चेतन एग्रो-टेक और महाराष्ट्र में केमिनोवा एग्रोटेक कंपनियों को चुना जिसमें उन्होंने वैज्ञानिक और तकनीकी तरीके से नीम के बीज के पिंड के उत्पादन के सभी पहलुओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया। परिवार द्वारा वित्तीय सहायता से, उन्होंने रु.48 लाख के स्वयं के निवेश से नीम के बीज के पिंड और नीम के तेल का उत्पादन एकक स्थापित किया। शुरुआत में, उन्होंने स्थानीय विज्ञापन दिये और उन्हें तीन जैविक कृषि कंपनियों से थोक के ऑर्डर भी प्राप्त हुये और स्थानीय कृषकों से टनों में मांग प्राप्त हुई। पहले भाग में उन्होंने 300 एम टी नीम के पिंड का खाद और 500 लिटर के आस पास नीम के तेल का निर्माण किया। उत्पादन की कुल लागत को घटाते के बाद उन्हें रु.22 लाख का लाभ प्राप्त हुआ। उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्हें नीम से अधिक उत्पादों के उत्पादन में प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। मौली एग्रोटेक नीम का शुद्ध खाद और नीम के तेल पर आधारित जैव-कीटनाशक तैयार करने का प्रमुख निर्माता है। इस एकक को नीम के बीज के अर्क को जैव कीटनाशक के रूप में प्रयोग किए जाने वाले शक्तिशाली और प्रभावी कीट वृद्धि नियामक में परिवर्तित करने हेतु बीज निकालने, शुद्धिकरण प्रक्रिया और निर्माण तकनीकों में दक्षता प्राप्त है। मौली एग्रोटेक ने अब तक 21 जैविक उत्पाद जैसे जैविक उर्वरक, पौध वृद्धि प्रवर्तक और संरक्षक, जैव-उर्वरक-संवर्धक और जैविक कीटनाशकों का निर्माण किया है। महाराष्ट्र के पाँच जिलों और गुजरात के सूरत और अहमदाबाद जिलों से इन उत्पादों की मांग है। कुल 9 अकुशल और 2 कुशल श्रमिकों को वेतन-निधि पर नियुक्त किया गया है। कंपनी का भविष्य स्वप्न ओर्गेनिक बागानों जैसे आम, सीताफल, अनार, मोरिंगा, सब्जियों आदि पर प्रदर्शनी प्लॉट आयोजित करना और ग्रामीण युवाओं को जैविक कृषि पर प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण स्कूल आरंभ करना तथा देश को स्वस्थ बनाने के लिए 'एग्रो टुरिस्म" और 'ओर्गेनिक फार्म फ्रेश शॉप' आरंभ करना है। रमेश और ज्ञानेश्वर उभरते कृषिउद्यमियों को "जैविक उगाओ, जैविक ख़रीदों" का संदेश देते हैं।

मौली एग्री-टेक

खलादकर वस्ती, पिंपरी दुमला, (रंगनगाँव गणपती), तालुका शिरुर, जिला पुणे, महाराष्ट्र-412209 (भारत), ईमेल आईडी: mauliagrotechpune@gmail.com

मोबाइल: +91 9923553737, +91 9923707602 ,वेबसाइट: www.mauliagrotech.com

श्री. के. मीरा प्रसाद
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: एक्शन फॉर वेलफ़ैर एंड अवेकनिंग इन रुरल एंवीरोंमेंट (अवेर)

पता: प्रगति भवन, 5-9-24/78, लेक हिल रोड, आदर्शनगर, हैदराबाद-500063, तेलंगाना स्टेट

मोबाइल नं.: 9000801042

ईमेल: nodalofficer@aware-group.com

वेबसाइट: www.aware-group.com

प्रशिक्षण की संख्या: 2

प्रशिक्षण के अंतर्गत अभ्यर्थियों की संख्या: 62

आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय – अवेर का महत्वपूर्ण मंत्र

एक्शन फॉर वेलफ़ैर एंड अवेकनिंग इन रुरल एंविरोंमेंट (अवेर), एक गैर-लाभकारी राष्ट्रीय विकास संगठन अपने आर्थिक विकास के साथ जुड़े सामाजिक कार्य योजना के आयोजन और लोगों को प्रेरित करने के द्वारा लोगों के विकास का आंदोलन बन गया है। इसने कानून को सामाजिक बदलाव में एक साधन के रूप में प्रयोग कर सफलतापूर्वक गरीबों को बंधन, दुख और पीड़ा से उभारा है। अवेर 6,000 से अधिक गाँवों में लोगों को आत्मनिर्भर और विकास के लिए सतत बनाने के लिए कार्य कर रहा है। अवेर की मुख्य विशेषता यह है कि यह लोगों के पीछे और उनके साथ खड़ा रेहता है न की लोगों के आगे। अवेर के संस्थापक डॉ. पी.के.एस. माधवन अपने कार्यों में इतने तल्लीन थे कि पुरस्कारों में उन्होंने कभी दिलचस्पी दिखाई ही नहीं; फिर भी उन्हें 34 विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने हर पुरस्कार को अवेर के समूह और उन करोड़ों गरीब लोगों को समर्पित किया है जिन्होंने अवेर के कार्यक्रमों और गतिविधियों को सफल बनाया और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में योगदान दिया। कुछ पुरस्कार उन्हें भारत के राष्ट्रपति, भारत के मुख्य न्यायाधीश, राज्यपालों, मुख्यमंत्री और पोप दलाई लामा से प्राप्त हुये।

श्री. पुजयश्री माधवनजी, अध्यक्ष, अवेर ने पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

मार्च, 2016 में मैनेज (भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय) ने बेरोजगार कृषि स्नातकों/डिप्लोमा धारकों/सामान्य अहर्ता रखने वालों के लिए एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए अवेर को नोडल प्रशिक्षण संस्थान (एनटीआई) के रूप में अनुमोदित किया। 60 दिवसीय प्रशिक्षण पुजयश्री माधवनजी कृषि पॉलिटैक्निक, अस्वारावपेट परिसर, खम्मम जिले में आयोजित किया जाता है। अब तक 27 अभ्यर्थियों की संख्या वाले एक बैच को प्रशिक्षित किया गया है और उन्होंने डीपीआर प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत में, 35 अभ्यर्थियों वाले दूसरे बैच को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। मैनेज की ओर से शुभेक्षा।

प्रदर्शनी दौरे के दौरान नारियल अनुसंधान केंद्र, अस्वारावपेट में एसी एवं एबीसी प्रशिक्षु

अहमदाबाद, गुजरात में "ग्लोबल एग्रिकल्चर सम्मिट-2013" में सम्मानित कृषि उद्यमी श्री. शैलेंद्र अवस्थी

श्री. शैलेंद्र अवस्थी, उत्तर प्रदेश राज्य के बहिराइच जिले के दूरवर्ती गाँव असमनपुर के एक युवा कृषि उद्यमी है। उन्होंने सघन धान प्रणाली (एसआरआई) के प्रयोग से एक हैक्टर भूमि में आश्चर्यजनक 125 क्विंटल धान का उत्पादन किया और इस क्षेत्र में खामोशी से कृषि आंदोलन चला रहे हैं। श्री. अवस्थी ने एसएमजीजीएस-वाराणसी में एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र योजना में प्रशिक्षण प्राप्त किया और कृषि में परामर्श सेवाएँ आरंभ की। प्रशिक्षण के दौरान वे धान के उत्पादन की एसआरआई तकनीक में प्रवीण हुये। तीन हफ्ते के धान के अंकुर को उगाने के बदले अवस्थी ने ताज़ा अंकुर (10-15 दिन) को 25 cm के अंतराल में ग्रिड पैटर्न में उगाना आरंभ किया। पहले परीक्षण में श्री. अवस्थी को 120 क्विंटल/हेक्टर की उपज प्राप्त हुई। आस-पास के कृषक अवस्थी के खेत का दौरा करते थे और उपज में वृद्धि देख कर चकित थे। दूसरे मौसम में, जब धान कटाई के चरण पर थी, बहिराइच के जिला कलेक्टर ने प्लॉट का दौरा किया और उनकी मौजूदगी में कटाई और वजन किया गया। फसल के उत्पादन का वज़न 125 क्विंटल/हेक्टेर था। जिला कलेक्टर ने श्री. अवस्थी को 10000/- रुपए दे कर सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने श्री. अवस्थी को "किसान सन्मान दिवस" पर निमंत्रित कर सम्मान दिया। भारत भर में अभिनव/प्रगतिशील किसानों को बढ़ावा देने के लिए, प्रगतिशील किसानों का सत्कार करने के लिए नरेंद्र मोदी सरकार ने गांधीनगर, गुजरात के महात्मा मंदिर में ग्लोबल एग्रिकल्चर सम्मिट-2013 आयोजित किया। इस कार्यक्रम का लक्ष्य था भारत के प्रत्येक 671 जिलों में से कम-से-कम एक कृषक का सत्कार किया जाए। प्रत्येक जिले से एक किसान को चुनने के लिए अधिकारियों की टीमों को भारत के प्रत्येक राज्य में भेजा गया। एसआरआई तकनीक के माध्यम से बम्पर उपज के उत्पादन को मान्यता देते हुये, बहिराइच जिले से श्री. अवस्थी को गांधीनगर, गुजरात के कार्यक्रम के दौरान आमंत्रित किया गया। श्री. मोदी जी ने श्री. अवस्थी को रु.51,000/-, मेमेंटों और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। श्री.शैलेंद्र अवस्थी को मोबाइल : +91 9792415960 पर संपर्क कर सकते हैं और skawasthi01031985@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्या मंत्री ने श्री शैलेन्द्र अवस्थी, कृषि उदयमी को किसान सनमान दिवस पे सन्मानित किया

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

कृषि उद्यमी उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज,)राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत
ई-मेल: indianagripreneur@manage.gov.in

"कृषि उद्यमी " श्रीमती वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
मुख्य संपादक : श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज
संपादक : डॉ. पी. चन्द्रशेखर, निदेशक (कृषि विस्तार),डॉ सरवनन राज निदेर्शक (कृषि विस्तार)
सहायक संपादक : डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमती. ज्योति सहारे
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली